43

कष्टप्रद बाधाएं या लाभदायक विराम

बाइबल पाठ #17

VI. तीसरे फसह से यीशु के बैतनिय्याह में आने तक।
- क. तीसरा फसह (देखें यूहन्ना 6:4; 7:1)।
- ख. परम्परा का पालन न करने का दोष लगना (मत्ती 15:1-20; मरकुस 7:1-23)।
- ग. हेरोदेस के इलाके से निकलना (मत्ती 15:21; मरकुस 7:24)।
- घ. फिनीके (या कनानी जाति) की स्त्री की लड़की को चंगा करना (मत्ती 15:22-28; मरकुस 7:25-30)।
- ड. हेरोदेस के इलाके से दूर रहना (मत्ती 15:29; मरकुस 7:31)।
- च. एक गूंगे समेत बहुत से लोगों को चंगा करना (मत्ती 15:30, 31; मरकुस 7:32-37)।
- छ. चार हजार लोगों को खिलाना (मत्ती 15:32-39क; मरकुस 8:1-9)।

परिचय

मैं बाधाओं से अच्छी तरह से नहीं निपटता हूं। मुझे प्रतिदिन योजना बनाना अच्छा लगता है। मैं हर सप्ताह, महीने और वर्ष भर की योजना बनाना पसन्द करता हूं। मैं जानता हूं कि मुझे क्या करना है और इस काम को करने में कितना समय लग सकता है। मेरी समय-सारणी में बाधाओं के लिए कोई स्थान नहीं है। इस कारण बाधाएं आने पर मैं परेशान हो जाता हूं।

पूर्णकालिक प्रचारक के रूप में काम करते हुए चालीस वर्ष के दौरान मुझे विशेष तौर पर कई बाधाओं का सामना करना पड़ा है। एक सुसमाचार प्रचारक के काम पर पुस्तकें यही कहती हैं कि हर दिन की समय-सारणी में बाधाओं के लिए समय और स्थान होना आवश्यक है। इन पुस्तकों के लेखक उन बाधाओं को इस प्रकार दिखाते हैं, कि वे कई बार बनाई गई योजना से अधिक फल ला सकती हैं। यह जानने के बावजूद कि यह सच है, मैंने हर दिन के काम की समय-सारणी बनाई और बाधा आने पर घबरा गया।

इस पाठ में, हम देखेंगे कि यीशु ने आने वाली बाधाओं का सामना कैसे किया।

आपको याद होगा कि जीवन की रोटी पर संदेश के बाद, ''उसके चेलों में से बहुतेरे उल्टे फिर गए और उसके बाद उसके साथ न चले'' (यूहन्ना 6:66)। उसके बाद से, मसीह ने उस समय के लिए जब उसने उनके साथ नहीं रहना था, बारह चेलों की तैयारी के लिए अपने प्रयास तेज़ कर दिए। दिए गए बाइबल पाठ को पढ़ने पर आप प्रभु को बार-बार गलील से निकलते हुए पाएंगे। इसका एक कारण अपने शत्रुओं से झगड़ा करने से बचना था, परन्तु इसका एक और कारण अपने प्रेरितों के साथ अधिक समय बिताना भी था। परन्तु यीशु को बार-बार इस उद्देश्य को पूरा करने में रुकावट आती रही ज़्योंकि मित्र और शत्रु दोनों ही उसे रोकते रहे। यह पाठ इस बारे में है कि उसने उन कष्टप्रद बाधाओं को किस प्रकार लाभदायक विराम में बदल दिया।

आलोचना के द्वारा बाधित किया गया (मत्ती 15:1-20; मरकुस 7:1-23; देखें यूहन्ना 6:4; 7:1)

पांच हज़ार को खिलाने की बात बताते हुए यूहन्ना ने लिखा कि ''यहूदियों के फसह का पर्व निकट था'' (यूहन्ना 6:4)। यदि यूहन्ना 5:1 वाला ''यहूदियों का पर्व'' फसह ही था, तो 6:4 वाला फसह यूहन्ना की पुस्तक में तीसरा है।

कई लेखक (शायद अधिकतर) मानते हैं कि यीशु ने मुज्यतया यूहन्ना 7:1 के कारण जहां कहा गया है कि ''इन बातों के बाद यीशु गलील में फिरता रहा, ज़्योंकि यहूदी उसे मार डालने का यत्न कर रहे थे, इसलिए वह यहूदिया में फिरना न चाहता था'' के कारण यूहन्ना 6:4 वाले फसह में भाग नहीं लिया। यदि यीशु ने इस पर्व में भाग *लिया,* और मैं यह मानने को तैयार हूं कि वह इस पर्व में गया[1]–तो उसने ऐसा चुपके से और गुप्त रूप में किया[2] (यूहन्ना 7:10 से तुलना करें)। हमारे पास उस फसह से जुड़ी यरूशलेम की घटनाओं का कोई इतिहास नहीं है।

जहां तक हमारी अध्ययन की श्रृंखला की बात है, यूहन्ना 6:4 में फसह के हवाले का मुज्य उद्देश्य मसीह के जीवन के क्रम से हमारी सहायता करना है। उस फसह के लगभग छह महीने बाद, हमें महान गलीली सेवकाई का अन्तिम चरण मिलता है, जो उस क्षेत्र से बार-बार जाने के द्वारा दिखाया गया है।

एक कष्टप्रद बाधा

इस पाठ के आरज़्भ में, यीशु गलील में शिक्षा दे रहा था, कि फरीसियों और सदूकियों का एक दल यरूशलेम से आ गया।[3] वे मसीह को बाधित करने से नहीं हिचकिचाए। मरकुस 7:1 कहता है कि वे ''उसके पास इकट्ठे हुए।'' मैं उन्हें भीड़ में से रास्ता बनाते हुए यीशु को घेरा डालने के लिए उसके पास जाकर उसके सामने चिल्लाते हुए देख सकता हूं। इस बार उन्होंने नया आरोप ढूंढ़ा था कि उसके चेले बिना हाथ धोए खाते हैं, इसलिए वे प्राचीन परज़्परा को तोड़ रहे हैं। फरीसी लोग उन परज़्पराओं को मूसा की व्यवस्था के समान ही पवित्र मानते थे।

एक लाभदायक विराम

मसीह ने कष्टप्रद बाधा को मनुष्य की बनाई परज़्पराओं पर आवश्यक सबक सिखाने के अवसर के रूप में प्रसिद्ध करके एक लाभदायक विराम में बदल दिया। पहले उसने आरोप लगाने वालों को परमेश्वर की प्रेरणा रहित परज़्पराओं के सज़्बन्ध में कठोर चेतावनियां देते हुए सज़्बोधित किया। उसने ज़ोर दिया कि ऐसी परज़्पराएं ''मनुष्यों की आज्ञाएं'' हैं (मरकुस 7:7), न कि परमेश्वर की। उसने फरीसियों पर ''अपनी रीतियों के कारण पमरेश्वर की आज्ञा'' (मज़ी 15:3) को टालने का आरोप लगाया। उसने इसे एक प्राचीन मानवनिर्मित परज़्परा का उदाहरण देकर समझाया, जिसमें लोगों को अपने सारे या कुछ धन को ''परमेश्वर को समर्पित'' करने (देखें मरकुस 7:11; मज़ी 15:5) और फिर अपने बूढ़े जरूरतमंद माता-पिता को यह कहने की अनुमति थी कि ''क्षमा करना, पर हमें इस धन का इस्तेमाल आपकी सहायता के लिए करने की अनुमति नहीं है।''[4]

फिर, उसने भीड़ की ओर रुख किया। उसने वास्तव में उनसे कहा कि हाथ धोने की परज़्परा पुरानी और पवित्र तो थी, परन्तु इसका मूल अर्थ भुला दिया गया था: ''जो मुंह में जाता है, वह मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता [औपचारिक तौर पर उसे अशुद्ध नहीं करता] है, पर जो मुंह से निकलता है, वही मनुष्य को अशुद्ध करता है'' (मज़ी 15:11)। इस बात को समझें कि मुद्दा साफ-सफ़ाई का नहीं, बल्कि औपचारिक रूप में अशुद्धता का था। बाद में पतरस ने व्याज़्या करने के लिए कहा था, जिसका मसीह ने उज़र दिया था:

> ज़्या नहीं समझते, कि जो कुछ मुंह में जाता, वह पेट में पड़ता है और सण्डास में निकल जाता है? पर जो कुछ मुंह से निकलता है, वह मन से निकलता है, और वही मनुष्य को अशुद्ध करता है। ज़्योंकि बुरे विचार, हत्या, परस्त्रीगमन, व्यभिचार, चोरी, झूठी गवाही और निन्दा, मन ही से निकलती हैं। ये ही हैं जो मनुष्य को अशुद्ध करती हैं, परन्तु बिना हाथ धोए भोजन करना मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता (मज़ी 15:17-20)।

अन्त में जब यीशु अपने चेलों के साथ अकेला था, तो उसने उन्हें समझाया। उसने उन्हें फरीसियों के बारे में भी चौकस किया।[5] उसने फरीसियों की तुलना उस जंगली बूटी से की, जिसे परमेश्वर उखाड़ फैंकेगा (मज़ी 15:13)। उसने इन धार्मिक अगुओं को अन्धे मार्गदर्शक कहा, जो अन्धों (आंख मूंदकर उनके पीछे चलने वालों[6]) की अगुआई करते हैं।[7] ये सबक अर्थात बाधा से उत्पन्न सबक आवश्यक थे।

यदि आप प्रभु के लिए कुछ भी करने का प्रयास करते हैं, तो बहुत अधिक सज़्भावना है कि आपकी आलोचना की जाएगी। किसी ने कहा है कि आलोचना से बचने का एकमात्र ढंग यही है कि कुछ भी न किया जाए और न हीं कुछ बना जाए। जब आप अपनी पूरी कोशिश करते हैं और आलोचना से आपके काम में बाधा आती है, तो आप कई तरह से प्रतिक्रिया देते हैं: आपको अपने आप पर अफ़सोस हो सकता है, जैसा कि कइयों को होता है; आप छोड़कर जा सकते हैं, जैसा कई लोग करते हैं; या आप अपनी पूरी कोशिश कर

सकते हैं, जैसे मसीह ने की।

जब आलोचना होती है, तो पहले देखें कि ज़्या इसमें कोई सच्चाई है (मेरे अनुभव में, आम तौर पर इसमें सच्चाई अवश्य होती है)। फिर, विचार करें कि उसका उज़र देने या न देने से ज़्या कोई भलाई हो सकती है। अन्त में, प्रभु के लिए पूरे यत्न से काम करने में लगन से जुट जाएं। यदि आप इस प्रकार करते हैं, तो आप भी कष्टप्रद बाधा को लाभदायक विराम में बदल सकते हैं।

एक पुकार से बाधित किया गया (मत्ती 15:21-28; मरकुस 7:24-30)

अपने शत्रुओं का सामना करने के बाद, यीशु ''निकलकर, सूर और सैदा के देशों की ओर चला गया'' (मत्ती 15:21)। हमने पहले ही सुझाव दिया है कि इसका एक कारण सम्भवतया फरीसियों से दूर होना था, परन्तु मसीह का मुज्य उद्देश्य स्पष्टतया बारहों चेलों के साथ एकांत में समय बिताना था।[8] शत्रुओं के बढ़ते विरोध से यह और भी आवश्यक हो गया था कि वह अपने प्रेरितों को उस दिन के लिए तैयार करे, जब उसके शत्रुओं ने उसे मार डालना था।

जहां तक हम जानते हैं, विदेशी भूमि पर यीशु का यह पहली बार कदम रखना था। सूर और सैदा प्राचीन फिनीके देश के तटीय नगर थे।[9] फिनीके गलील के उज़र-पश्चिम में भूमध्यसागर के उज़र पूर्वी किनारे पर स्थित एक तंग पट्टी थी। मसीह के समय यह सुरिया के रोमी क्षेत्र का भाग था।

एक कष्टप्रद बाधा

''सूर के इलाके'' में पहुंचकर यीशु अपनी उपस्थिति को गुप्त बनाए रखने की इच्छा से ''एक घर में गया,'' परन्तु वहां ''वह छिप न सका'' (मरकुस 7:24)। हमने पहले भी एक पाठ में पढ़ा था कि मसीह की सेवकाई का समाचार ''सूर और सैदा के आस-पास'' के इलाकों तक फैल गया था (मरकुस 3:8)। इसलिए अधिक समय नहीं हुआ था, जब प्रभु की सहायता मांगने वाले किसी व्यक्ति के कारण उसे रुकावट आई थी: ''और तुरन्त एक स्त्री जिस की छोटी बेटी में अशुद्ध आत्मा थी, उसकी चर्चा सुन कर आई, और उसके पांवों पर गिरी। यह यूनानी[10] और सुरूफिनीकी जाति की थी'' (मरकुस 7:25, 26क)। ''सुरूफिनीकी'' शब्द फिनीके के लोगों को सूरिया के राज्य के दूसरे लोगों से अलग करता था।

उस स्त्री ने पुकार कर कहा, ''हे प्रभु, दाऊद की सन्तान मुझ पर दया कर'' (मत्ती 15:22क)। ''दाऊद की सन्तान'' मसीहा के लिए एक इस्राएली शब्द था। यहूदी आशा आस-पास के देशों में भी फैल गई थी।[11] उसने यीशु को बताया, ''मेरी बेटी को दुष्टात्मा बहुत सता रहा है'' (मत्ती 15:22ख)। मरकुस ने ज़ोर देकर कहा है कि ''वह उस से विनती *करती रही,* कि मेरी बेटी में से दुष्टात्मा निकाल दे'' (मरकुस 7:26ख; NASB)। मत्ती के अनुसार, वह चिल्लाती रही (मत्ती 15:23)। यह हठी, *शोर मचाने वाली* मां थी।

उसकी बच्ची को सहायता की आवश्यकता थी, और वह चाहती थी कि सबको यह बात पता चल जाए। यदि किसी छोटे बच्चे को कभी कोई गज़्भीर बीमारी हो जाए, तो आप उसके साथ सहानुभूति प्रकट कर सकते हैं।

एक लाभदायक विराम

यीशु और उस स्त्री के बीच होने वाला वार्तालाप सबसे नाटकीय और उलझाने वाला है। ऊपर से लगता है कि मसीह ने जानबूझकर उसका अपमान किया। आरज़्भ में, उसने उसे अनदेखा किया और उसके चेलों ने उससे पीछा छुड़ाने की कोशिश की[12] (मज़ी 15:23)। अन्त में जब उसने उससे बात की, तो उसने कहा, ''इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों को छोड़ किसी के पास नहीं भेजा गया'' (मज़ी 15:24)।

इस दुस्साहसी मां को इनमें से कोई बात रोक नहीं पाई। वह मिन्नतें करती रही, ''हे प्रभु, मेरी सहायता कर'' (मज़ी 15:25)। यीशु ने उज़र दिया, ''पहिले लड़कों को तृप्त होने दे,[13] ज़्योंकि लड़कों की रोटी लेकर कुज़ों के आगे डालना उचित नहीं है'' (मरकुस 7:27)। यीशु के वाज़्य में ''लड़कों'' स्पष्टतया यहूदियों को कहा गया था, जिसका अर्थ अन्यजातियों को ''कुज़े'' कहना था। आपको कोई कुज़ा कहे तो कैसा लगेगा? यदि मैं वह स्त्री होता, तो मैं क्रोध में आकर वहां से चले जाने की परीक्षा में आ जाता! इसके बजाय उसने चतुराई से उज़र दिया, ''सच हे प्रभु; तो भी कुज़े भी तो बालकों की मेज़ के नीचे बालकों की रोटी का चूर-चार खा लेते हैं'' ''जो मालिकों की मेज़ से गिरता है'' (मरकुस 7:27; मज़ी 15:27)।

इस दृश्य को अपने मन में उतारने पर मुझे उज़र देते यीशु के चेहरे पर आई मुस्कान दिखाई देती है, ''हे स्त्री तेरा विश्वास बड़ा है। इस बात के कारण चली जा; दुष्टात्मा तेरी बेटी में से निकल गई है'' (मज़ी 15:28क; मरकुस 7:29)। मज़ी ने लिखा है कि ''उसकी बेटी उसी घड़ी से चंगी हो गई'' (मज़ी 15:28ख)। मरकुस ने लिखा है कि घर वापस जाकर, उसने ''देखा कि लड़की खाट पर पड़ी है [कोई संदेह नहीं कि सदमे से घबराई हुई], और दुष्टात्मा निकल गई है'' (मरकुस 7:30)। मुझे यह कहानी बहुत अच्छी लगती है!

यह कहानी नाटकीय और आकर्षक ज़रूर है, लेकिन उलझाने वाली भी है। टीकाकारों को यीशु द्वारा इस्तेमाल किए गए शज़्दों को समझने में कठिनाई आती है, जिसे हम उसके चरित्र और उद्देश्य कहते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि मसीह के शज़्दों को ज़्यों का त्यों लेना चाहिए। उसे सचमुच ''इस्राएल की खोई हुई भेड़ों के पास'' भेजा गया था (मज़ी 10:6)। बाद में, ''अन्य भेड़ें ... जो इस बाड़े की नहीं [अर्थात, अन्यजातियां]'' भी बुलाई जानी थीं, ताकि यहूदी और अन्यजाति अच्छे चरवाहे की निगरानी में ''एक झुंड बन जाएं'' (यूहन्ना 10:16)।[14] इसके साथ ही (ये टीकाकार ज़ोर देते हैं) यीशु ने अपने मुज़्य उद्देश्य से न हटने की ठानी हुई थी (मज़ी 10:5)। मेरा मानना है कि इस उद्देश्य पर उसका ध्यान मसीह के आरज़्भिक उज़र का एक कारण था,[15] परन्तु निश्चय ही यह पूरी व्याज़्या नहीं है। यीशु ने इससे पहले सहायता के लिए एक अन्यजाति की पुकार का सकारात्मक उज़र दिया

था (मत्ती 8:5-13)। इसके अलावा, सूर के क्षेत्र से निकल जाने के बाद, उसने कई अन्यजातियों को चंगाई दी थी।[16]

यह विचार करते हुए कि मसीह ने ऐसा क्यों कहा, मैं इस पर अति बल नहीं दे सकता, हमें अन्यजातियों के विरुद्ध पूर्वधारणा को निकालना होगा। यीशु दूसरी जातियों के विरुद्ध सामान्य यहूदी द्वेष से पीड़ित *नहीं* था (देखें लूका 2:32; मत्ती 8:10-12; 12:18, 21)।

दूसरे लोग इस तथ्य पर ज़ोर देते हैं कि हम नहीं जानते कि मसीह ने उस स्त्री से बात करते हुए *कैसे* शब्दों का इस्तेमाल किया। वे हमें याद दिलाते हैं कि आम तौर पर यीशु व्यक्ति को देखकर उसके स्वभाव के अनुसार बात करता था।[17] इसलिए वे सुझाव देते हैं कि प्रभु और किसी स्त्री के बीच यह एक सजीव वार्तालाप था, जिसमें तुरन्त उत्तर देने और सुखद वातावरण था। यह कल्पना करने में कि यीशु ने बात करते हुए आंख दबाई होगी, मुझे कोई परेशानी नहीं है। बातचीत के अन्त में उसके चेहरे पर मुस्कराहट होगी। अभी भी कहानी में कुछ और बाकी है।

मेरे मन में उस स्त्री की विनती के उत्तर में मसीह की एक और सम्भावना है। कहानी के अन्त में, यीशु ने लड़की को चंगा कर दिया, इसलिए मेरा मानना है कि आरम्भ से ही उसकी यह इच्छा थी। इसके अलावा उसकी बातों का उद्देश्य कहानी के अन्त में उस मां के विश्वास की सराहना से जुड़ा लगता है: ''हे स्त्री, तेरा विश्वास बड़ा है'' (मत्ती 15:28क)। बी. एस. डीन ने लिखा है, ''उसके इतने दीन, इतने अजेय विश्वास से फरीसियों के कपट और अन्यजातियों की चंचलता के बाद अवश्य ही राहत मिली होगी।''[18] केवल दो बार मसीह ने किसी के विश्वास की इस प्रकार सराहना की-और ये सुरूफिनीकी स्त्री और रोमी सूबेदार थे (मत्ती 8:10; लूका 7:9) जो दोनों ही अन्यजाति थे।

अन्य शब्दों में, यीशु के कठोर शब्दों का उद्देश्य अपने चेलों को उस स्त्री के विश्वास की गहराई को दिखाना हो सकता है। याद रखें कि प्रभु उसके मन को जानता था (यूहन्ना 2:25) और उसके विश्वास को भी जानता था। इस सम्भावना पर विचार करें: यीशु ने इस अवसर को उस प्रकार के विश्वास के सम्बन्ध में जैसा भविष्य में आवश्यकता होनी थी, प्रेरितों के लिए एक सबक के रूप में इस्तेमाल करके कष्टप्रद बाधा को लाभदायक विराम में बदल दिया।[19] उसे मालूम था कि चेलों को क्या समस्याएं आएंगी (मत्ती 10:17, 18, 21, 22, 24, 25)। विजयी होने का एकमात्र ढंग उस स्त्री जैसा विश्वास था: ऐसा विश्वास जो निराश होने या पीछे हटने से इनकार करे (1 यूहन्ना 5:4)। हम में से हर एक को यह सबक सीखना आवश्यक है।

कई बार, आप किसी भले काम में लगे हो सकते हैं कि कोई सहायता के लिए बुलाकर, जिसका उससे जो काम आप कर रहे हैं, थोड़ा सा या कोई भी सम्बन्ध नहीं है, आपको रोक दे। ऐसा हो जाने पर विचार करें कि आप उस बाधा से कैसे लाभ उठा सकते हैं और उसका इस्तेमाल सकारात्मक ढंग से कैसे कर सकते हैं। जैसा कि पहले भी संकेत दिया गया है, अन्तिम परिणाम आरम्भ में योजना बनाने के समय की तुलना में अधिक परमेश्वर की महिमा के लिए हो सकता है।

भीड़ द्वारा बाधित किया गया (मत्ती 15:29-31; मरकुस 7:31-37)

यीशु और उसके चेले सूर के इलाके से निकलकर, तुरन्त गलील में नहीं आए। इसके बजाय अभी भी हेरोदेस के क्षेत्र में जाने से बचते हुए,[20] वे सैदा के उज़र में चले गए, फिर पहाड़ों के पार और यरदन नदी के आरज़्भ के उज़र में, और अन्त में गलील सागर के पूर्वी तट के साथ-साथ ''दिकापुलिस देश'' (मरकुस 7:31) में एक उजाड़ क्षेत्र में पहुंच गए (मरकुस 8:4)।[21]

एक कष्टप्रध बाधा

अपने गंतव्य पर पहुंचकर प्रभु पहाड़ के एक ओर चढ़कर बैठ गया (मत्ती 15:29), कोई संदेह नहीं कि अपने चेलों को सिखाने के लिए।[22] एक बार फिर उसे रोका गया: ''और एक बड़ी भीड़, लंगड़ों, अन्धों, गूंगों, टुंडों और बहुत औरों को लेकर उस के पास आई, और उन्हें उसके पावों पर डाल दिया'' (मत्ती 15:30क)।[23]

यह वही इलाका था, जहां यीशु ने दुष्टात्मा से ग्रस्त दो लोगों को चंगा किया था और उसे वहां से चले जाने के लिए कहा गया था (मरकुस 5:17)। मसीह ने चंगाई पाने वाले एक व्यक्ति से कहा था कि वह लोगों को बताए कि प्रभु ने उस पर कैसी करुणा की है (मरकुस 5:19)। तुरन्त वह आदमी ''दिकापुलिस में इस बात का प्रचार करने लगा, कि यीशु ने मेरे लिए कैसे बड़े-बड़े काम किए'' और जिसने सुना वह हैरान हो गया (मरकुस 5:20)। उस आदमी के संदेश का प्रभाव हज़ारों लोगों में देखने को मिलता है (मरकुस 8:9), जो आस-पास के इलाके से सहायता के लिए आए थे (मरकुस 8:3)। इससे पहले उस क्षेत्र के लोगों ने कहा था, ''हमारे सिवानों से चला जा!'' अब वही लोग विनती कर रहे थे, ''हमारी सहायता कर!''[24]

एक लाभदायक विराम

यदि मसीह निरन्तर आने वाली इन बाधाओं से परेशान हुआ, तो उसने इसे दिखाया नहीं। इस अवसर पर, उसने इस बाधा को अधिकतर अन्यजाति श्रोताओं के मनों को[25] सच्चे और जीवते परमेश्वर की ओर लाने के अवसर में बदल दिया: ''... और उसने उन्हें चंगा किया। सो जब लोगों ने देखा, कि गूंगे बोलते और टुंडे चंगे[26] होते और लंगड़े चलते और अन्धे देखते हैं, तो अचज़्भा करके इस्राएल के परमेश्वर की बड़ाई की''[27] (मत्ती 15:30ख, 31)।

मरकुस ने ''एक बहरे को जो हकला भी था'' चंगा करने[28] की (मरकुस 7:32) एक विशेष घटना लिखी है।

> ''तब वह उस को भीड़ से अलग ले गया, और अपनी उंगलियां उसके कानों में डालीं, और थूक कर उस की जीभ को छूआ।[29] और स्वर्ग की ओर देखकर आह

भरी, और उस से कहा; इप्फज़ह,[30] अर्थात् खुल जा। (मरकुस 7:33, 34)।

यीशु ने उस आदमी के कानों में उंगलियां ज़्यों डालीं? उसने थूका ज़्यों? इस बारे में हमें नहीं बताया गया है। ये काम एक जैसी चंगाइयों में दोहराए गए थे, इसलिए जो उसने किया, वह संयोग ही था। दूसरी ओर, स्वर्ग की ओर ''आह भरी'' का महत्व है, ज़्योंकि इससे हमें पता चल जाता है कि प्रभु केवल शरीर को, बिना भावना के चंगा नहीं कर रहा था;[31] उसका मन शारीरिक और आत्मिक दोनों प्रकार की व्याधियों से लड़ रहे हर व्यज़्ति से प्रभावित होता था। एक लेखक ने कहा है कि मसीह ने आह इसलिए भरी होगी ''ज़्योंकि उसे संसार के उन करोड़ों गूंगे-बहरों का ध्यान था, जिन्होंने कभी बोल और सुन नहीं पाना था।''[32]

यीशु के ''खुल जा!'' कहने पर उस आदमी के ''कान खुल गए, और उस की जीभ की गांठ भी खुल गई, और वह साफ-साफ बोलने लगा'' (मरकुस 7:35)। लोग ''बहुत ही आश्चर्यचकित होकर कहने लगे, उसने जो कुछ किया सब अच्छा किया है'' (मरकुस 7:37)।

अन्ततः यीशु के उस क्षेत्र से चले जाने के बाद ऐसे लोग रह गए, जिनके मन सुसमाचार ग्रहण करने को तैयार थे।[33] यदि मैं और आप बाधाओं से सही ढंग से पेश आते हैं, तो हम प्रभु का मन दिखा रहे होंगे और इससे उनके लिए जो हमारे लिए बाधा उत्पन्न करते हैं, सुसमाचार को सिखाने का द्वार खुल जाएगा। इस पर विचार करें।

एक संकट द्वारा बाधित किया गया (मज़ी 15:32-38; मरकुस 7:36; 8:1-9)

पहले, यीशु ने चंगाई पाने वाले एक आदमी से कहा था, कि जो कुछ उसके साथ हुआ है, वह सब को बताए (मरकुस 5:19)। परन्तु इस बार उसने अपने सुनने वालों को ''चिताया कि किसी से *न* कहना'' (मरकुस 7:36क)-ज़्योंकि उसका उद्देश्य बदल चुका था। अब उसे अपने चेलों के साथ समय चाहिए था।

सामान्य की तरह, उसकी बात अनसुनी कर दी गई, और उसकी प्रसिद्धि पूरे क्षेत्र में फैल गई (देखें मरकुस 7:36ख)। यह संज़्या बढ़ते-बढ़ते ''बड़ी भीड़'' (मरकुस 8:1क) बन गई और ''स्त्रियों और बालकों को छोड़, चार हज़ार पुरुष'' हो गए (मज़ी 15:38)। आठ से बारह हज़ार के लगभग लोग वहां होंगे, जिनमें से कुछ तो ''दूर से आए'' थे (मरकुस 8:3)।

एक कष्टप्रद बाधा

एक बार फिर, बाधित किए जाने पर यीशु अनुग्रहकारी ही बना रहा था, उस समय भी जब यह बाधा तीन दिन तक चलती रही (मज़ी 15:32; मरकुस 8:2)। हमें उन तीन दिनों के बारे में कुछ नहीं बताया गया है, परन्तु कोई संदेह नहीं कि इस दौरान वह लोगों को

सिखाता और चंगाई देता रहा।[34]

उन लोगों के विपरीत जो कफ़रनहूम से मसीह के पीछे आए थे,[35] इस भीड़ के लोग अपने साथ सामान लेकर आए होंगे–परन्तु, तीन दिन बाद, उनका सामान खत्म हो गया। तब, बाधा की प्रकृति बदल गई: उन्हें भोजन की आवश्यकता पड़ी!

एक लाभदायक विराम

अपने स्वभाव के अनुसार, प्रभु ने फिर एक कष्टप्रद बाधा को लाभयदायक विराम में बदल दिया। एक सबक को फिर से दोहराने के लिए, उसने पहले यह समस्या अपने चेलों को बताई (मत्ती 15:32; मरकुस 8:1–3)। उन्होंने कुछ यूं कहा होगा, ''हमें नहीं पता कि इस दुविधा से कैसे निकला जाए'' (मत्ती 15:33; मरकुस 8:4)!

कुछ टीकाकारों को यह विश्वास करना कठिन लगता है कि प्रेरित पांच हज़ार को खिलाने की बात इतनी जल्दी कैसे भूल गए हो सकते हैं। वे निष्कर्ष निकालते हैं कि पांच हज़ार को खिलाने और चार हज़ार को खिलाने के वृत्तांत एक ही घटना के अलग-अलग रूप हैं। ऐसा निष्कर्ष निकालने का कोई औचित्य नहीं है:

इसका पहला कारण तो यह है कि मत्ती और मरकुस *दोनों* ने इन घटनाओं को लिखा है और वे दशकों पहले हुई कहानियों को नहीं लिख रहे थे। मत्ती ने एक प्रत्यक्षदर्शी के रूप में लिखा, क्योंकि वह प्रेरितों में से एक था। मरकुस का वृत्तांत एक प्रत्यक्षदर्शी (प्रेरितों में से एक, पतरस की[36]) गवाही के आधार पर था।

दूसरा, यीशु ने बाद में अपने चेलों को ताड़ना देते समय *दोनों* घटनाओं की बात की (मत्ती 16:9, 10; मरकुस 8:19, 20)।

तीसरा, दोनों घटनाओं में समानताएं तो हैं, परन्तु भिन्नताएं भी हैं:

(1) स्थान अलग था। आश्चर्यकर्म से पहली बार खिलाने का स्थान गलील की झील के उत्तरी सिरे के पास था, जबकि दूसरा स्थान दक्षिणी सिरे के पास।

(2) भीड़ अलग थी। पहली भीड़ में अधिकतर यहूदी थे; जबकि दूसरी में अधिकतर अन्यजाति थे।

(3) भीड़ का आकार अलग था–पांच हज़ार पुरुष बनाम चार हज़ार।

(4) समय अलग था। पहली भीड़ वहां एक दिन रही थी, जबकि दूसरी भीड़ तीन दिन रही।

(5) भोजन की आवश्यकता का कारण अलग था। पहली भीड़ भोजन लाई ही नहीं थी; जबकि दूसरी भीड़ का भोजन समाप्त हो गया था।

(6) उपलब्ध संसाधन अलग थे। पहली घटना में पांच रोटियां और दो मछलियां मिली थीं; दूसरी में सात रोटियां और कुछ मछलियां थीं।

(7) अलग सामान इस्तेमाल किया गया था। पहली घटना में बारह छोटी टोकरियां इस्तेमाल हुई थीं; दूसरी में सात बड़ी[37] टोकरियां इस्तेमाल हुईं।

और भी अन्तर हो सकते हैं। पहली भीड़ घास पर बैठी थी (मत्ती 14:19; मरकुस

6:39), जबकि दूसरी भीड़ भूमि पर बैठी थी (मत्ती 15:35; मरकुस 8:6)। पहली भीड़ ने यीशु को राजा बनाने की कोशिश की थी; परन्तु दूसरी भीड़ से ऐसी कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। बाइबल के परमेश्वर की प्रेरणा से होने को मानने वाला कोई भी व्यक्ति यही निष्कर्ष निकालेगा कि ये दोनों घटनाएं अलग-अलग हैं। ऐसा होने पर, हम प्रेरितों की प्रतिक्रिया की व्याख्या कैसे कर सकते हैं?

तथ्य यह है कि आम तौर पर किसी नई सच्चाई को समझने के लिए चेलों को समय लगता था।[38] मुझे यह स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं कि कुछ नया सीखने के लिए *मुझे* कई बार दोहराने पर ही समझ आती है। आप इसे मानने को तैयार हों या न, परन्तु आपको भी एक बार में समझ नहीं आती होगी। अपने छात्रों को बार-बार एक ही सच्चाई बताते रहने के लिए यीशु कितना सहनशील था! यह भी विचार करें कि मसीह और उसके प्रेरितों को भी भूख लगती थी; साधारणतया यीशु आश्चर्यकर्म से भूख नहीं मिटाता था (देखें यूहन्ना 4:6, 8, 31)। इसके अलावा, पांच हज़ार को खिलाने के बाद (यूहन्ना 6:26, 27) एक संकेत के रूप में कि वह बार-बार ऐसा आश्चर्यकर्म नहीं करेगा, चेलों को प्रभु से खूब डांट मिली थी। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए, उनकी प्रतिक्रिया उतनी अजीब नहीं होगी, जितनी हमें पहली बार लगती है।

आगे की कहानी आप जानते हैं: एक बार फिर यीशु ने आश्चर्यकर्म से हज़ारों लोगों को खिलाया (मत्ती 15:34-38; मरकुस 8:5-9)। याद रखें कि उसने यह काम भूख मिटाने के लिए ही नहीं, बल्कि चेलों को एक आवश्यक सबक सिखाने के लिए भी किया था। (अगले पाठ में इस पर हम और बात करेंगे।)

अभी के लिए यह सीख लें कि कभी-कभी, बाधाएं पूरे उद्देश्य से भटकने के बजाय उसमें योगदान दे सकती हैं। इसलिए, जब बाधाएं आ जाएं, तो विचार करें कि वे कैसे आपकी पहले से बनाई हुई योजना के अनुकूल हो सकती हैं। आप पाएंगे कि प्रभु ने आपके लिए इससे भी बेहतर योजना बनाई हुई थी!

सारांश

यीशु ने अपने चेलों के साथ एकांत में रहने की इच्छा छोड़ी नहीं थी। लोगों को खिलाने के बाद, उसने उन्हें भेज दिया और झील के पश्चिम की ओर जाने के लिए किश्ती में सवार हो गया (मत्ती 15:39; मरकुस 8:9, 10)। परन्तु आप दो बातों से आश्वस्त हो सकते हैं कि और भी बाधाएं आनी थीं (मत्ती 15:39; 16:1; मरकुस 8:10, 11), और मसीह ने कष्टप्रद बाधाओं को लाभदायक विरामों में बदल देना था।

किसी ने लिखा है कि जीवन वही है, "जो वास्तव में दूसरी योजनाएं बनाते समय हमारे साथ घटता है।"[39] हम इसे यह कहने के लिए ले सकते हैं कि "जीवन वही है, जिसमें सावधानीपूर्वक बनाई गई हमारी योजनाओं में बाधाएं आ जाती हैं।" बाधाएं आने पर परमेश्वर और अनुग्रहकारी होने में हमारी सहायता करे-और जब वे आ जाएं-तब भी वह यीशु से यह सीखने में हमारी सहायता करे कि हम उन कष्टकारी बाधाओं को अपने

जीवनों के शज़्तिशाली विरामों में बदल सकें!

नोट्स

यदि आपको लज़्बे शीर्षक पसन्द हैं, तो इस शीर्षक को ''कष्टप्रद बाधाओं को लाभदायक अन्तरालों में बदलना'' नाम दे सकते हैं। यदि आपको छोटे शीर्षक पसन्द हैं, तो यह ''बाधाओं का सामना करना'' भी हो सकता है।

इस पाठ की तीनों कहानियों से एक प्रवचन बन सकता है।

कहानी 1

इस पाठ के बाद, फरीसियों द्वारा यीशु के चेलों पर परज़्परा तोड़ने का आरोप लगाने पर प्रवचन है। इस कहानी को अलग-अलग ढंगों से समझा जा सकता है। नीचे एक वैकल्पिक रूपरेखा दी गई है:

I. आरोप (मज़ी 15:1, 2; मरकुस 7:1-5)।
II. उज़र (मज़ी 15:3-9; मरकुस 7:6-13)।
III. प्रासंगिकता (मज़ी 15:10-20; मरकुस 7:14-23)।

इनसे मिलते-जुलते प्वायंटों से आप ''जिस दिन यीशु ने फरीसियों को चौंका दिया,''[40] पर प्रचार कर सकते हैं:

I. फरीसी यीशु की शिक्षा से कि प्राय: मनुष्य की परज़्पराएं परमेश्वर के वचन को पीछे कर देती हैं, चौंक गए थे (मज़ी 15:3-6)।
II. वे उसकी शिक्षा से कि बाहरी रूप गौण हैं, चौंक गए थे (आयतें 7, 8)।
III. वे उसकी शिक्षा से कि मनुष्य द्वारा अधिकृत आराधना व्यर्थ है, चौंक गए थे (आयत 9)।
IV. वे उसकी शिक्षा से कि हाथों की सफ़ाई से अधिक मन की सफाई महत्वपूर्ण है, चौंक गए थे (आयतें 10, 11, 15-20)।
V. वे उसकी शिक्षा से कि मनुष्य की परज़्पराओं से नाश हो जाएंगे, चौंक गए थे (आयत 13)।
VI. वे उसकी शिक्षा से कि केवल निष्ठा ही काफी नहीं है, चौंक गए थे।[41]

इस कहानी पर पढ़ाने के बाद अन्त में रिचर्ड रोजर्स ने इन आत्मिक पाठों पर ध्यान दिलाया:

- सच्चाई के शत्रु आम तौर पर वही धार्मिक लोग होते हैं, जो मनुष्य की परज़्पराओं

के अनुसार चलते हैं।

- हमें किसी भी धार्मिक प्रबन्ध से जो पाप करने और परमेश्वर के वचन को तोड़ने का बहाना देता है, सावधान रहना चाहिए।
- हमें उस आराधना से बचना चाहिए, जो केवल होंठों से होती है, मन से नहीं।
- यदि हम भीतरी मनुष्य को प्रमुखता दें, तो बाहरी मनुष्य भी वैसा हो जाएगा, जैसा परमेश्वर उससे चाहता है। सच्ची पवित्रता भीतर से निकलती है।
- परज़्परा से पीछा छुड़ाना कठिन है। जो हमारे अन्दर ऐसी चीज़ है, जो अतीत को पकड़े रखना चाहती है और कोई परिवर्तन नहीं लाती। यहां तक कि पतरस को भी यह सबक दो बार सीखना पड़ा था![42]

फरीसियों के आरोप की कहानी के छोटे-छोटे भाग प्रवचनों का आधार बन सकते हैं। (1) उदाहरण के लिए, यीशु के ''कुरबानी'' का उदाहरण, ''*हम* अपने माता-पिता का ध्यान वैसे ज़्यों नहीं रखते, जैसे हमें रखना चाहिए?'' प्रस्तुति के परिचय के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। हमारे पास कुरबान का कोई बहाना नहीं है, परन्तु लोग अभी भी बहाने बनाते रहते हैं, जैसे ''असल में यह मेरी ज़िज़्मेदारी नहीं है।'' (2) यशायाह से उद्धरण ''खाली कब्र'' पर प्रवचन के लिए सामग्री हो सकती है। कुछ लोगों का विचार है कि परमेश्वर की कोई भी और कैसे भी की गई आराधना स्वीकार्य है, परन्तु यह आयत घोषणा करती है कि यदि परमेश्वर के वचन का सज़्मान नहीं होता या यदि आराधना मन से नहीं होती, तो यह व्यर्थ, या बेकार होती है, पहली बात, आराधना के नये नियम के ढंग से मनुष्यों की परज़्पराओं के दूर हो जाने पर प्रचार के लिए अवसर मिल सकता है। दूसरी बात मण्डली के लिए प्रवचन पर लागू होगी। (3) अन्ततः, मज़ी 15:18-20क और मरकुस 7:20-23 में मसीह के शज़्दों का इस्तेमाल ''मनुष्य को ज़्या अशुद्ध करता है?'' पर प्रचार करने के लिए हो सकता है। इन पापों पर कई कमेंट्रियों में सामग्री मिल जाती है।

कहानी 2

सुरूफिनीकी स्त्री के वृज़ांत से एक अच्छा प्रवचन बन जाएगा। जैसा कि मैंने इस पाठ में संकेत दिया है, मुझे यह कहानी पसन्द है। यदि मैंने ''परज़्पराओं'' पर प्रस्तुति की आवश्यकता न समझी होती, तो इस शृंखला का अगला प्रवचन सज़्भवतया उसी घटना पर केन्द्रित होता। उस घटना पर, प्रवचन के पहले भाग में कहानी को नाटकीय ढंग से दोबारा बताया जा सकता, जबकि दूसरे भाग में यह खोज की जा सकती कि यीशु ने ऐसा ज़्यों कहा और फिर उस स्त्री जैसे विश्वास की आवश्यकता की प्रासंगिकता बनाई जा सकती है।

कहानी 3

चार हज़ार पुरुषों को खिलाने का आश्चर्यकर्म पांच हज़ार को खिलाने के आश्चर्यकर्म के नीचे दब गया है। पांच हज़ार को खिलाने के आश्चर्यकर्म पर कई प्रवचन दिए गए हैं,

परन्तु चार हज़ार को खिलाने पर बहुत कम। यदि आपने पहले पांच हज़ार को खिलाने की घटना पर प्रचार नहीं किया है, तो शायद आप ''अलग होना'' चाहते हैं और इस बार चार हज़ार को खिलाने पर प्रचार करें। दोनों घटनाओं का इस्तेमाल करके एक जैसे मुज़्य प्वायंट दिए जा सकते हैं।

एक और सज़्भावना

मरकुस 7:37 से इस वाज़्य पर कई प्रवचन दिए जा चुके हैं: ''उसने जो कुछ किया सब अच्छा किया।'' पृष्ठभूमि पर ध्यान देने के बाद, इस वाज़्य की सामान्य सच्चाई पर ध्यान दिलाया जा सकता है कि प्रभु *सदा* ''सब अच्छा करता'' है। फिर आप उन विशेष क्षेत्रों को जिन पर आप ज़ोर देना चाहते हैं, ले सकते हैं जैसे कि उसने सृष्टि में अच्छा किया; उसने विवाह और परिवार की स्थापना में अच्छा किया; उसने हमें बाइबल देकर अच्छा किया; उसने हमारे कारण मरने के लिए संसार में आकर अच्छा किया; उसने उद्धार के लिए हमें शर्तें देकर अच्छा किया; उसने अपनी कलीसिया की स्थापना करके अच्छा किया; इत्यादि।

कुछ जो हम सबको चाहिए

हम सबने परमेश्वर का अनुग्रह पाया है। नीचे तीन आयतें हैं, जिन पर हमें विचार करना चाहिए:

- ''तेरे पास ज़्या है जो तू ने नहीं पाया?'' (1 कुरिन्थियों 4:7)।
- ''मैं जो कुछ भी हूं, परमेश्वर के अनुग्रह से हूं'' (1 कुरिन्थियों 15:10क)।
- ''तौभी यह मेरी ओर से नहीं हुआ, परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से जो मुझ पर था'' (1 कुरिन्थियों 15:10ख)।

आइए परमेश्वर के अनुग्रह के लिए उसका धन्यवाद करें और कृतज्ञता तथा प्रेम से उसकी बात मानने का निश्चय करें (रोमियों 2:4; 1 यूहन्ना 5:3)। परमेश्वर का अनुग्रह न होता, तो हम में से किसी का भी उद्धार नहीं हो सकता था (इफिसियों 2:8, 9)।

टिप्पणियां

[1]यूहन्ना 7:1 का सज़्बन्ध यूहन्ना 6:4 से उतना नहीं लगता जितना अगले भाग से है। इस पद में उस भाग का परिचय है और इसमें व्याज़्या की गई है कि यीशु ने अपने भाइयों को ज़्यों बताया कि मण्डपों (झोंपड़ियों) के पर्व में जाने की उसकी कोई योजना नहीं थी। [2]हमारे यहां, हम कहेंगे कि वह पर्व के दौरान ''गुमनाम रखा।'' [3]इस घटना पर पूरी चर्चा के लिए, इस पुस्तक में अगले प्रवचन देखें। [4]जहां तक हम जानते हैं, फरीसियों ने यीशु और उसके चेलों के विरुद्ध इस आरोप का इस्तेमाल कभी नहीं किया। निश्चय ही

मुकदमे के समय यह आरोप नहीं लगाया गया। [5]फरीसियों के बारे में अपने चेलों को यीशु की चेतावनियां जारी रहनी थीं-जैसा कि हम अगले पाठ में देखेंगे (देखें मत्ती 15:39-16:12; मरकुस 8:10-21)। [6]इस पुस्तक में बाद में ''जब फरीसियों ने ठोकर खाई'' पाठ देखें। [7]यीशु ने इस एकरूपता का पहले इस्तेमाल किया था (लूका 6:39), और उसने दोबारा इसका इस्तेमाल करना था (मत्ती 23:16, 24)। [8]कुछ लेखकों का सुझाव है कि यीशु सुसमाचारीय उद्देश्यों के लिए फिनीके में गया, परन्तु मरकुस 7:24 और मत्ती 15:24 से संकेत मिलता है कि ऐसा नहीं था। [9]यहूदी लोगों के प्राचीन इतिहास में सूर और फिनीके का सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार का योगदान था। [10]मूल शास्त्र में ''यूनानी'' है। नये नियम में आम तौर पर अन्यजातियों के लिए ''यूनानी'' शब्द का इस्तेमाल किया गया है।

[11]इस वाक्यांश की तुलना यूहन्ना 4:25 में सामरी स्त्री के ''मसीहा'' शब्द के इस्तेमाल से करें। [12]परेशान करने वाली समस्याओं के लिए यह उनका ''हर हल'' था (देखें मत्ती 14:15)। मत्ती 15:24 की रोशनी में वे यह सुझाव दे रहे होंगे कि यीशु उसे वही दे जो उसे करना था ताकि वह चली जाए और उन्हें अकेले छोड़ दे। [13]''पहले'' शब्द से संकेत मिलता है कि *बाद में* अन्यजातियों को भी अवसर मिलना *था*-जो कि मिला भी। [14]यह तब हुआ जब मसीह ने सब लोगों में सुसमाचार ले जाने की महान आज्ञा दी (मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16)। [15]फिनीके में सहायता के लिए विनतियों से यीशु आसानी से प्रभावित हो सकता था, जिससे वहां किए जाने वाले काम की उसकी आशा धूमिल हो जाती। [16]इसके अलावा इस पाठ के अगले भाग ''भीड़ द्वारा बाधित किया गया'' में और व्याख्या दी गई है। [17]यूहन्ना 3 अध्याय में यहूदी अगुवे के साथ उसके बात करने की तुलना यूहन्ना 4 में सामरी स्त्री से उसके बात करने से करें। [18]बी.एस. डीन, ''बाइबल इतिहास की एक रूपरेखा'' पुस्तक में नये नियम की रूपरेखा देखें। [19]ज़बर्दस्त सम्भावना यह भी है कि यीशु जब किसी अन्यजाति की सहायता करता था, वह इस विचार को लोगों के मनों में डाल रहा होता था कि परमेश्वर की दिलचस्पी गैर यहूदियों में भी है। [20]इस तथ्य के बावजूद कि यीशु गलील से दिकापुलिस में नहीं गया, और इस कारण वह ''गया ही नहीं'' कुछ समन्वयों में इसे यीशु का ''गलील से दूसरी बार जाना'' कहा गया है और अन्यों में इसे ''गलील से तीसरी बार जाना'' कहा गया है। वह ''गया'' या नहीं इसका कोई महत्व नहीं है-और यदि गया तो कितनी बार गया। इतना जानना ही कफ़ी है कि इस दौरान मसीह हेरोदेस के इलाके में जाने से बचा।

[21]दिकापुलिस की स्थिति जानने के लिए इस पुस्तक में ''यीशु की सेवकाई के समय पलिश्तीन'' मानचित्र देखें। [22]उस ज़माने में सिखाने के लिए बैठने का ढंग सही माना जाता था (मत्ती 5:1, 2)। [23]मूल शास्त्र में ''उन्हें नीचे फैंक दे'' है (KJV और ASV से तुलना करें)। हमें यह नहीं मानना चाहिए कि वे उनके साथ दुर्व्यवहार करते थे जो बीमार होते थे, परन्तु बातों से उनकी उतावली और चिन्ता का संकेत मिलता है। [24]यदि आपको दोहराव पसन्द है, और आप इन वाक्यांशों का इस्तेमाल करना चाहें तो कर सकते हैं: पहले, उस इलाके के लोग कहते थे, ''हमारे सिवानों से चला जा!'' अब लोग मिन्नत कर रहे थे, ''हमारे बीमारों को चंगा कर दे!'' एक और सम्भावना है ''हमारे सिवानों को छोड़ दे'' बनाम ''हमारे बीमारों की सहायता कर।'' [25]झील के पूर्वी किनारे (पांच हज़ार) वाली पहले वाली भीड़ से इस भीड़ में अलग लोग थे। वह भीड़ कफ़रनहूम से यीशु के पीछे आई थी और उसमें अधिकतर यहूदी लोग थे। यह भीड़ इसी क्षेत्र से आई थी और इसमें मुख्यतया अन्यजाति लोग होंगे। [26]मूल शास्त्र में कहा गया है कि ''विकलांग'' लोग ''चंगे'' हो गए। द लिविंग बाइबल में इस विचार को इस वाक्यांश में दिखाया गया है: ''बिना भुजाओं और टांगों वाले लोगों के नये अंग लग गए।'' आज किसी तथाकथित ''चंगाई सभा'' में किसी व्यक्ति के नया अंग लग जाने पर आप कल्पना कर सकते हैं कि क्या होगा? [27]''इस्राएल के परमेश्वर'' वाक्यांश एक और प्रमाण है कि यह मुख्यतया अन्यजाति लोगों में ही हुआ। [28]स्पष्टतया उस आदमी का न बोल पाना केवल सुन न पाने के कारण ही नहीं था। मरकुस 7:35 कहता है कि ''उसकी जीभ की गांठ'' थी। [29]''थूक कर'' से यह पता नहीं चलता कि मसीह ने *कहां* थूका, न इसमें यह कहा गया है कि उसने थूक लगाकर किया। [30]यह अरामी भाषा का शब्द है।

[31]जहां हम रहते हैं, वहां कहा जा सकता है, ''उसने चंगाई की अपनी शक्तियां स्वचालित पायलट पर

सैट नहीं की।'' [32]जे. डज़्ल्यू. मैज़गर्वे एण्ड फिलिप्प वाई. पैंडलटन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गास्पल्स* (सिंसिनटी: स्टैण्डर्ड पज़्लिशिंग कं., 1914), 403. मैज़गर्वे का हवाला फ्रैड्रिक डज़्ल्यू. फरार, *द लाइफ ऑफ़ क्राइस्ट* (न्यू यॉर्क: कैसल एण्ड कं., 1885), 229-30. [33]यरूशलेम से कलीसिया के बिखर जाने पर (प्रेरितों 8:1-4), मसीही लोग पलिश्तीन के आस-पास के इलाके में फैल गए थे (प्रेरितों 8:2, 5; 11:19)। उनमें से बहुतों के मन यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले, यीशु तथा प्रेरितों द्वारा किए गए पहले काम से तैयार हो गए थे। [34]इसकी तुलना पांच हज़ार लोगों के साथ किए गए उसके पहले काम से करें (मरकुस 6:34; मत्ती 14:14)। [35]मत्ती 14:13, 14; मरकुस 6:32-34; लूका 9:10, 11 पढ़ें। [36]''मसीह का जीवन, भाग 1'' में पृष्ठ 31 से 33 पर इन पदों की समीक्षा करें। [37]दूसरी बात खिलाने के सज़्बन्ध में ''टोकरी'' के लिए अलग यूनानी शज़्द का इस्तेमाल हुआ है। चार हज़ार को खिलाने में ''टोकरी'' के लिए शज़्द का अर्थ ''*बड़ा* टोकरा'' है। ये टोकरियां कई बार इतनी बड़ी होती हैं कि इनमें आदमी को रखा जा सकता था। [38]जे. डज़्ल्यू. मैज़गर्वे ने लिखा है कि ''पिछले अनुभव के बावजूद, आश्चर्यकर्म की उज़्मीद करने की असफलता, इस्राएल और बारह चेलों के इतिहास में सामान्य बात थी [देखें गिनती 11:21-23; भजन संहिता 78:19, 20]'' (मैज़गर्वे एण्ड पैंडलटन, 405)। [39]लियोनार्ड लुईस लैविंसन, *वैबस्टर'स अनअफ्रेड डिज़्शनरी* (न्यू यॉर्क: कोलियर बुज़्स, 1967), 138 में उद्धृत, रॉबर्ट लॉरेंस बाल्ज़र। [40]इस पुस्तक में आगे ''जब फरीसियों ने ठोकर खाई'' पाठ देखें।

[41]एल्गर फिच, *प्रीचिंग क्राइस्ट* (जोपलिन, मिज़ोरी: कॉलेज प्रैस, 1992), 79 से लिया गया। [42]रिचर्ड रोजर्स, *बिहोल्ड योर किंग (बुक ऑफ़ मैथ्यू)* (लज़्बॉक:, टैज़्सस: सनसैट स्टडी सीरीज, पृष्ठ नहीं), 19.